कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

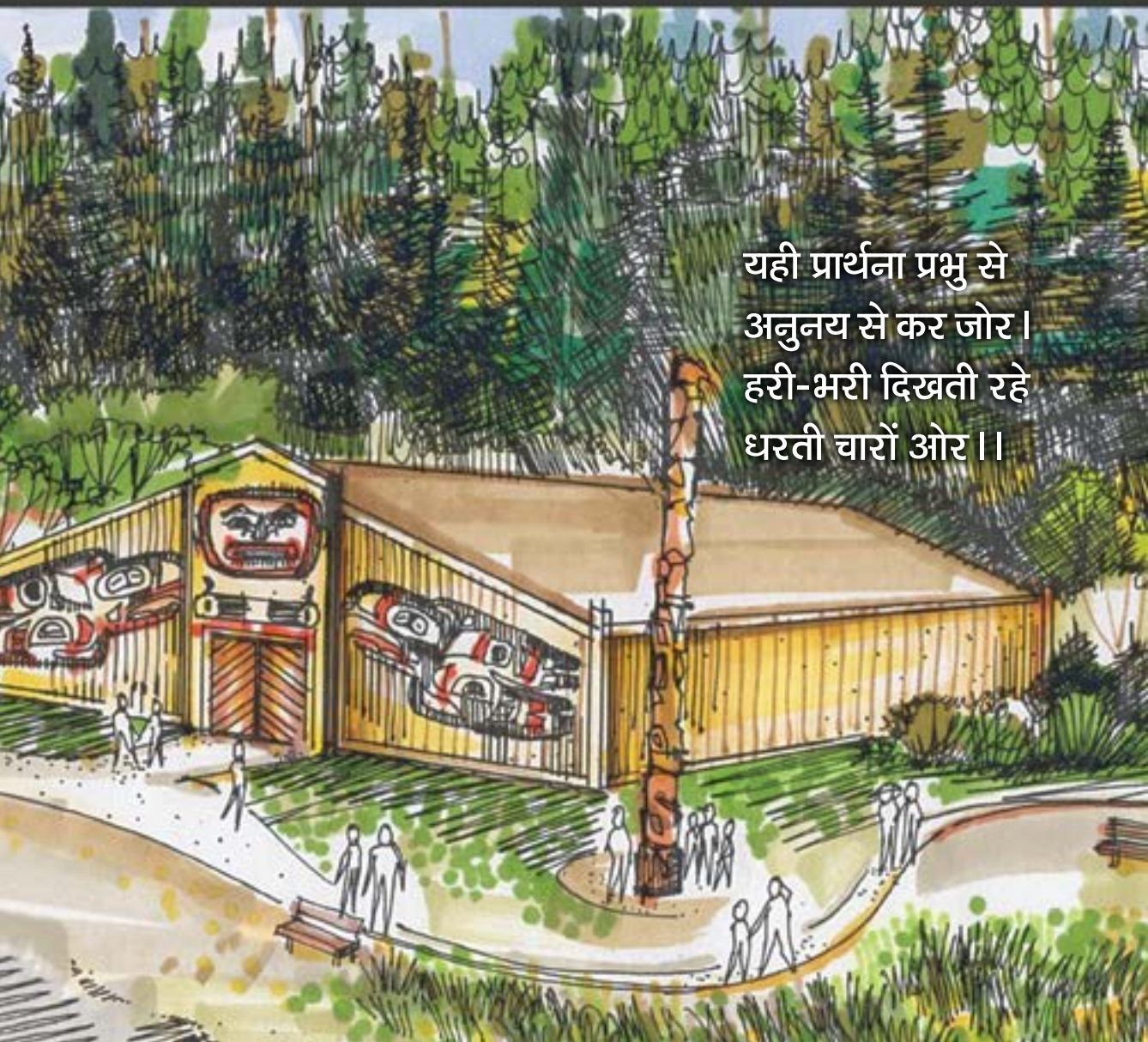

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष 27, अंक 2

अप्रेल-जून 2016 (विक्रम संवत् 2073)

सम्पादक

स्नेहलता बैद

–सम्पादन सहयोग–

तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :

161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग

2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता - 7

दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :

29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट

(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)

कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :

13/14, डबसन लेन, 4 तल्ला,

गुलमोहर पार्क के पास

हावड़ा - 1, दूरभाष-2666–2425

–प्रकाशक–

विश्वनाथ बिस्वास

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, on behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata-700 007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata-700 005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- सम्पादकीय 2
- जनजातियों के विकास का... 3
- सिंहस्थ कुम्भ में वनवासियों की दस्तक 5
- कल्याण आश्रम गोवा द्वारा भव्य कृषि... 8
- कोलकाता में हितरक्षा आयाम की बैठक... 8
- वनवासी महानायक बिरसा मुंडा : जीवन... 9
- आस्था और श्रद्धा से मनाये गए रामनवमी... 10
- राष्ट्रीय सुरक्षा और धर्मांतरण 11
- सिलाई प्रशिक्षण नें मेरे जीवन की दिशा... 13
- शोक संवाद 14
- भारतीय नोटों पर जनजातीय भाषाओं... 14
- योजना बैठक सम्पन्न 14
- आगामी कार्यक्रम 14
- बोधकथा ... सच्ची प्रार्थना 15
- कविता ... मैंने भजा है जय श्रीराम 15
- अभिनंदन 16
- अनुकरणीय 16

संपादकीय...

अरण्य संस्कृति में निहित है पर्यावरण संरक्षण का मर्म

हमारी धरती दिन-ब-दिन गर्म हो रही है। पिछले दो सौ सालों के दौरान हमने प्रगति के नाम पर कल-कारखानों से इतना "विकास" रचा कि पृथ्वी ही तमतमा गई। फैक्ट्रियों और गाड़ियों से उठता धुंआ वातावरण में छा गया। प्रदूषण, पेड़ों की कटाई व विकास के नाम पर हो रहे "विनाश" ने मौसम चक्र को बदल दिया है। भूजल के घटते स्तर के कारण खेती, बिजली उत्पादन और पेयजल के लिए भयानक संकट उत्पन्न हो गया है। हम सब इस जलवायु परिवर्तन के लिए समान रूप से भागीदार हैं। यदि अभी न चेते तो हमारी आने वाली पीढ़ी हमें कभी माफ नहीं करेगी। हम जंगलों को काट रहे हैं, जंगली जानवरों को वहां से भगा रहे हैं। शहर ही नहीं गाँवों में भी पेड़ों को काट-काट कर पत्थरों के जंगल खड़े कर रहे हैं। कुल मिलाकर हम ऐसे जीवन की ओर बढ़ रहे हैं जिसमें सिवाय विनाश के अलावा कुछ नहीं है। जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग पर अकुंश के लिए दुनिया के नेता लगभग 25 साल से नीतियां बनाने में उलझे हैं। सम्मेलन दर सम्मेलन हो चुके हैं। हाल में संम्पन्न पेरिस सम्मेलन में भी कोई आशा की किरण नजर नहीं आती है। पर्यावरण से जुड़े ये बदलाव अत्यधिक वर्षा, बाढ़ और सूखे के रूप में सामने आते हैं। सच तो यह है कि हम समस्याओं के समाधान की जगह उनके विस्तार के आयोजक बन जाते हैं। कीड़े जड़ में घुसे हैं। दवा हम पत्तों पर छिड़क रहे हैं। हमारे समाज का हर आदमी अमीर और धनी हो जाने की दौड़ में आँख पर पट्टी बांधकर दौड़ रहा है। धरती को निजी संपदा मानकर उसका अंधाधुंध दोहन किया जा रहा है। गाना पर्यावरण विकास का गाते हैं और पेड़ सारे काटे जा रहे हैं। न छाया, न ही वर्षा। पर्यावरण का प्रभावी संरक्षण और उसे कदापि हानि न पहुंचाने का प्रत्यक्ष उदाहरण वनवासियों की जीवन शैली और संस्कृति में निहित है। ऋग्वेद का सन्देश है, "मित्रस्याहम चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे" अर्थात हम प्रकृति की समूची कृतियों को मित्र की दृष्टि से देखें। अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में "माता भूमि: पुत्रोहम पृथ्विया:" अर्थात मैं पृथ्वी माता का पुत्र हूं और समस्त वन और वनस्पति माता का उपहार है। पर्वतों के संरक्षण, जल के विवेकपूर्ण उपयोग, मृदा संरक्षण पर वेदों में प्रार्थनाएं हैं। वर्तमान में सस्टेनेबल डेवलपमेंट (संपोषणीय विकास) की चर्चा जोरों पर है। सस्टेनेबल डेवलपमेंट का उद्भव और विकास वनांचलों में ही हुआ है। इस गौरवशाली अरण्य संस्कृति ने कभी भी भोगवाद को श्रेष्ठ नहीं माना। प्रत्येक वस्तु को त्याग पूर्वक उपभोग करना वनवासी का स्वभाव है। जितना मुझे चाहिए मैं प्रकृति से उतना ही लूं और शेष प्रकृति को लौटा दूं। यह हमारी जीवन शैली है। वर्तमान भौतिक युग में उपभोक्तावाद की संस्कृति हावी है जो अत्याधिक मात्रा में संग्रहण, अथाह धन के खर्च, आवश्यक ना होने पर भी खरीद और बिना बात ही पुरानी वस्तु को त्याग नई वस्तु खरीदने को प्रेरित करती है। ऐसा करने पर पुरानी वस्तुओं का कबाड़ इकट्ठा होता जाता है, और पर्यावरण को हानि होती है। हमारी अरण्य संस्कृति अपरिग्रह अर्थात आवश्यकता से अधिक का संग्रह न करने और जितना प्राप्त हो, उससे ज्यादा लौटाने में विश्वास करती है। इस मार्ग से चलकर ही हम पर्यावरण संरक्षण में सहभागी बन सकते हैं। इति शुभम्

- स्नेहलता वैद

जनजाति नीति दृष्टिपत्र

जनजातियों के विकास का दिशादर्शक दस्तावेज

- प्रमोद पेठकर, अ.भा.प्रचार प्रसार प्रमुख

कहते हैं किये बिना कुछ होता नहीं और प्रत्येक कृति के पीछे कोई न कोई विचार होता है। विचार यदि सही दिशा में रहा तो उद्देश्य प्राप्ति निश्चित ही होती है और यदि उसके लिए सामूहिक प्रयास हुए तो लक्ष्य प्राप्ति के लिए गति भी बढ़ती है। ऐसा ही कुछ कल्याण आश्रम के कार्य का है। दूसरे शब्दों में कहें तो जनजातियों का विकास भी कुछ ऐसा ही है। वनवासी कल्याण आश्रम के इसी दिशा में प्रयास, याने "जनजाति नीति दृष्टिपत्र" का प्रकाशन।

सोमवार, दिनांक 21 मार्च 2016 को दिल्ली के कान्स्टीट्यूशन क्लब में वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा एक समारोह का आयोजन हुआ। "जनजाति नीति दृष्टिपत्र" लोकार्पण के पूर्व संयुक्त महामंत्री विष्णुकान्त जी ने इस निमित्त कल्याण आश्रम के संस्थापक वनयोगी बालासहब, पूर्व राष्ट्रीय संगठन मंत्री भास्करराव जी, डॉ. बी. डी. शर्मा एवं दिलीप सिंह भुरिया का स्मरण कर इस दस्तावेज की प्रासांगिकता को प्रतिपादित किया। सरकार ने आज तक क्या किया और क्या करना अपेक्षित है, इस पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

इस समारोह में जनजाति कार्य मंत्री जुएल ओराम तथा कल्याण आश्रम के अध्यक्ष जगदेवराम उरांव जी का उद्‌बोधन हुआ। जुएल उरांव जी ने कहा कि सरकार भी इसी प्रकार के डाक्युमेन्टेशन बनाने के प्रयास में है, परन्तु एक सामाजिक संगठन होते हुए भी कल्याण आश्रम ने हमसे पहले इसे बनाया है। यह दूसरे किसी को कितना उपयोगी होगा ये पता नहीं परन्तु हमारे लिए जनजाति नीति दृष्टिपत्र अवश्य उपयोगी होगा।

श्री जगदेवराम उरांव जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि देश में कई कानून हैं परन्तु उसका क्रियान्वयन ठीक से होना चाहिए। जनजाति लोक प्रतिनिधियों का प्रशिक्षण होना चाहिए। विकास होना चाहिए, ऐसा सबको लगता है परन्तु जनजाति समाज संगठित न होने से विकास की कोई चर्चा ही नहीं होती। शिक्षा, आरोग्य रोजगार सभी प्रकार का विकास होना चाहिए। संक्षेप में कहना है तो विकास ऐसा हो कि अपने जनजाति बन्धु स्वाभिमान के साथ भारत माता की जय कह सकें। हम सभी का सौभाग्य है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह मा. सुरेश उपाख्य भैय्याजी जोशी ने भी समारोह में उपस्थित सभी का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि **यह दस्तावेज भूमि से जुड़े, सामाजिक कार्य के अनुभवी, विशेषज्ञों ने बहुत गहराई से अध्ययन कर बनाया है और जो प्रामाणिकता से कारवाई करेंगे ऐसे मंत्री महोदय स्वयं इसे लेने यहां पधारे यही इसके निर्माण का महत्व बता रहा है।**

जनजाति नीति दृष्टिपत्र में सुझाव दिया गया है कि वनाधिकार कानून की समयबद्ध क्रियान्विति हो, तीसरे अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति आयोग का गठन किया जाए, भूरिया आयोग की सिफारिशों को लागू किया जाए, अनुसूचित क्षेत्रों के राज्यपालों एवं मुख्यमंत्रियों के लिए अलग से वार्षिक सम्मेलन बुलाया जाए और राष्ट्रीय जनजाति नीति शीघ्र बने।

केन्द्रीय मंत्री श्री प्रकाश जावडेकर, चौधरी विरेन्द्र सिंह, डा. जितेन्द्र सिंह जैसे कई महानुभाव संसद में जनजाति

समाज का नेतृत्व कर रहे कई सांसद, प्रतिष्ठित नागरिक उच्च एवं सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता, पत्रकार बन्धु और जनजाति क्षेत्र में कार्यरत कई सामाजिक कार्यकर्ताओं सहित कई महानुभाव पधारे थे।

यह जनजाति बन्धुओं के विकास की दिशा में मार्गदर्शन करने वाला महत्वपूर्ण दस्तावेज है। जिसमें वनाधिकार कानून, पंचायत-पेसा कानून, राष्ट्रीय जनजाति नीति, संविधान की पाँचवी एवं छठी अनुसूची तथा राज्यपालों की भूमिका जैसे कई महत्वपूर्ण विषयों का उल्लेख है। हिन्दी एवं अंग्रेजी में प्रकाशित इस जनजाति नीति दृष्टिपत्र में शासन-प्रशासन सामाजिक एवं आर्थिक जैसे कई प्रकार के विषयों को सम्मिलित किया है। यह दृष्टिपत्र देश के नीति निर्धारक सरकार के मंत्रीगण एवं अधिकारी जनजाति सांसद एवं अन्य चुने हुए कार्यकर्ता सभी के अध्ययन करने योग्य है।

पिछले समय से इस दस्तावेज के निर्माण हेतु पूर्व तैयारियां चल रही थी। जनजाति समाज के प्रमुख व्यक्ति नासिक (महाराष्ट्र) में एकत्रित हुए और कई विषयों पर विचार-विमर्श हुआ। "केशव सृष्टि" मुंबई में एक कार्यशाला का आयोजन हुआ, जिसमें शासन-प्रशासन से जुड़े वर्तमान एवं निवृत्त अधिकारी, विविध सामाजिक संगठनों के अनुभवी व्यक्ति (जो कई समय से जनजातियों के बीच विभिन्न प्रकार से कार्यरत हैं) सम्मिलित हुए थे। यहां भी कई विषयों पर चर्चा सत्र हुए। वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता जिन्हें जनजाति समाज में कार्य करने का वर्षों से अनुभव है, उनके सुझाव भी आमंत्रित किये गये। गुवाहाटी में पूर्वांचल के परिप्रेक्ष्य में कार्यशाला हुई। संक्षेप में कहें इस दृष्टिपत्र रुपी मक्खन निकालने हेतु कई प्रयास हुए। कल्याण आश्रम के संयुक्त महामंत्री विष्णुकांत जी ने कहा कि इस दस्तावेज के निर्माण में डॉ. जे. के. बजाज एवं मुंबई की रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी के सहयोग को हम कैसे भूल सकते हैं?

आज सर्वत्र विकास पर चर्चा चल रही है। बड़े बड़े कारखाने, नदियों पर बांध हाईड्रोपावर प्रोजेक्ट जैसे कई प्रकल्पों का निर्माण होते दिखाई देता है। ये सब करना है तो कहीं जंगल कट रहे हैं। जनजातियों का विस्थापन हो रहा है। तो मन में प्रश्न उपस्थित होता है कि जनजाति के सन्दर्भ में विचार करना है। तो देश के विकास का क्या होगा? क्या ये दोनों एक दूसरे के आमने सामने हैं?

परन्तु वनवासी कल्याण आश्रम के विचार स्पष्ट हैं। देश का विकास अवश्य करना है परन्तु जनजातियों की कीमत पर नहीं। विकास के फल यदि जनता को मिलने हैं तो इसमें जनजातियों का भी विचार होना चाहिए। विकास का अमृत देश की जनता को मिले उस समय जनजाति बन्धुओं के लिए भी अमृत का हिस्सा अवश्य रहे। क्योंकि जनजाति समाज भी सम्पूर्ण समाज का अविभाज्य अंग है। ये नहीं हो सकता कि अमृत सभी को मिले और जनजातियों के लिए केवल जंगल कटाई, विस्थापन जैसा विष। विकास की विभिन्न योजनाओं का क्रियान्वयन करते समय यदि जंगल काटना पड़े, जनजातियों का विस्थापन आवश्यक लगे तो उसके साथ विकल्पों पर भी विचार हो। विस्थापन आवश्यक है, तो पुनर्वास भी ठीक हो। हम देश के ऐसे विकास के पक्षधर हैं जिसमें जनजाति समाज को भी सम्मिलित किया जाए।

देश की जनजातियों के विकास के बारे में नीति भी होनी चाहिए। यह कहने में बड़ा खेद होता है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश की शिक्षा नीति स्वास्थ्य नीति, आर्थिक नीति बनी होगी परन्तु आज तक जनजातियों के बारे में, उनके विकास के बारे में कोई नीति नहीं बनी है। वनवासी कल्याण आश्रम इस नीति दृष्टिपत्र के माध्यम से दिशा निर्धारण कर रहा है।

कहते हैं कि गति चाहे कम-अधिक हो परन्तु दिशा सुनिश्चित हो तो एक न एक दिन गन्तव्य पर हम अवश्य पहुंचैंगे, लक्ष्य अवश्य प्राप्त करेंगे। कल्याण आश्रम ने इस नीति दृष्टिपत्र के माध्यम से न केवल जनजाति समाज को परन्तु सम्पूर्ण समाज को जनजाति विकास के लिए एक प्रकार से प्रेरित किता है। यह हम सभी के लिए पथप्रदर्शक है। ■

सिंहस्थ कुम्भ में वनवासियों की दस्तक

- अतुल जोग, सह संगठन मंत्री, अ. भा. व.कल्याण आश्रम

अपनी आर्थिक स्थिति की मर्यादा और सामाजिक परिवेश ऐसा है कि दूर-दूर तक पवित्र स्थानों की यात्रा करने की परम्परा वनवासी परिवारों में बहुत ही कम है। अधिक से अधिक आसपास के किसी मंदिर अथवा यात्राधाम पर, जहाँ चलकर जाना संभव हो वहाँ तक जाने का क्रम कई जगह देखने को मिलता है। परिणामस्वरूप हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक जैसे स्थानों पर, जहाँ कुम्भ आयोजित होता है, वहाँ वनवासी समाज के आने का दृश्य देखने को नहीं मिलता है।

वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं ने विचार किया कि उज्जैन के सिंहस्थ कुंभ में अपने वनवासी बन्धुओं को लाने के प्रयास होने चाहिए। इस हेतु कार्य योजना बनी।

मध्यभारत प्रांत में रूद्राक्ष के शिवलिंग की 12 यात्राओं का आयोजन किया गया। इन यात्राओं के माध्यम से वनवासी क्षेत्रों मैं जनजागरण हेतु प्रांत के जनजाति जिलों में उज्जैन के कुम्भ में आने का संदेश दिया गया। वनवासी बन्धुओं ने यात्रा का स्वागत अपनी परम्परागत पद्धति से किया। शिवलिंग का पूजन कर सिंहस्थ कुम्भ में आने का संकल्प लिया। प्रत्येक यात्रा में कोई न कोई वनवासी संत उपस्थित रहे। जहाँ जिस गाँव में यात्रा का रात्रि पड़ाव रहता, वहाँ धर्मसभाओं का आयोजन भी हुआ।

प्रतिदिन यात्रा औसत 10 गाँवों में जाएँ ऐसा प्रवास आयोजन था। प्रत्येक रथ के साथ यात्रा प्रमुख, दिन प्रमुख एवं ग्रामीण कार्यकर्ता रहते थे। माता-बहनें शिवलिंग की पूजा अर्चना करती थीं। पत्रिकाओं का वितरण किया गया।

कुम्भ में पूर्ण समय भोजन का आयोजन होने वाला था तो उसके लिए दर्शन के साथ-साथ सभी एक मुट्ठी चावल दें, ऐसा आह्वान किया गया। समाज ने भी पूर्ण मनोयोग के साथ सहयोग किया। 1000 क्विंटल चावल एकत्रित हुआ।

956 गाँवों में भ्रमण कर सभी यात्राओं की 17 अप्रैल को उज्जैन में पेशवाई हुई। उस समय वहाँ महामण्डलेश्वर 1008 स्वामी सुरेशानंद जी, संत श्री दादु दयाल जी महाराज, संत श्री रणजीत सिंह जी महाराज, संत श्री विवेक चैतन्य महाराज, संत श्री मनोहर बाबा, संत श्री मंगा जी महाराज, संत श्री मुन्ना जी महाराज जैसे कई संत उपस्थित थे।

इन यात्राओं के आयोजन से मध्य भारत प्रांत के ग्रामीण क्षेत्र के वनवासी समाज में श्रद्धा भाव का अलौकिक जागरण हुआ। कुंभ में अपने वनवासी बन्धु क्षिप्रा में पवित्र स्नान करने, भगवान महाकाल का दर्शन करने, संतो से आशीष लेने अवश्य आएँगे, ऐसा विश्वास जगा।

दूसरे चरण में सम्पूर्ण देश के सभी प्रांतों ने नृत्य दल तथा समाज के प्रमुख व्यक्तियों को कुम्भ में भेजने के प्रयास किये गये। सिंहस्थ कुम्भ में जहाँ वनवासी कल्याण आश्रम का प्रत्यक्ष शिविर प्रारम्भ होने वाला था, वहाँ जनजाति जीवन की विशेषताओं का दर्शन हो, इस हेतु निम्न प्रकार से विचार किये गये-

1) जनजाति जीवन दर्शन हेतु प्रदर्शनी
2) जनजाति क्षेत्र में पाई जानेवाली वन औषधियों का प्रदर्शन तथा आयुर्वेद पद्धति से वैद्यों द्वारा उपचार की व्यवस्था
3) वनवासियों द्वारा सांस्कृतिक नृत्यों का प्रस्तुतिकरण
4) रूद्राक्ष के 11 फीट ऊँचे शिवलिंग का प्रतिदिन अभिषेक

5) कुम्भ में आनेवाले वनवासी परिवारों के लिये नि:शुल्क भोजन, निवास एवं भ्रमण की व्यवस्था

परिसर की समस्त गतिविधियाँ रोमांचित करने वाली थी। इस परिसर के विभिन्न प्रकल्पों के नामकरण अद्‌भुत व प्रेरणादायी हैं। मुख्यद्वार -रानी दुर्गावती द्वार, दूसरा द्वार वीर शंकर शाह द्वार। प्रदर्शनी का नाम रहा **"आदिबिम्ब"** जिसमें दुर्लभ जनजातीय चित्रों का व्यवस्थित प्रस्तुतिकरण, मुख्य द्वार के ठीक सामने छिंदवाडा में बना आदिम जाति अनुसंधान एवं विकास संस्था के म्युजियम की प्रतिकृति श्री बादल भोई प्रांगण की सुंदर साज-सज्जा सबको भीतर आने को आकृष्ट करती। कार्यालय के व्यवस्थित कक्ष अनुशासित जीवन जीने की मानो प्रेरणा प्रदान करते थे। जूते-चप्पल बाहर उतारकर प्रविष्ट होना वास्तव में किसी मंदिर में प्रविष्ट होने जैसा अनुभव रहता।

"शबरी भोजनालय" से श्रीराम का बेर खाने वाला प्रसंग स्मरण हो जाता था। यह भारतभूमि श्रेष्ठ भूमि है यहाँ पर चक्रवर्ती सम्राट सुदूर वनांचलों में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति की चिन्ता करता है। वह शबरी जैसी भीलनी के हाथों प्रेम से जूठे बेर खाने में जरा भी नहीं हिचकता है। ये भोजनशाला शबरी के पवित्र प्रेम, राम को खिलाए हुए बेर व सामाजिक समरसता का संदेश देती है। यहाँ हजारों बंधु-भगिनी रोज प्रेम से भोजन कर रहे थे।

स्वास्थ्य रक्षा का प्रकल्प-संजीवनी केन्द्र अवर्णनीय है। अनेक प्रकार के रोगों का इलाज आयुर्वेद पद्धति से करने की प्रेरणा देते वैद्यजी व उनके कुशल मार्गदर्शन में उचित आहार-व्यवहार, क्या खाना या क्या न खाना की जानकारी यहाँ आनेवालों को दी जाती थी। जिन दुर्लभ औषधिय पौधों के बारे में केवल पुस्तकों में पढ़ा था अनेक लोग यहाँ प्रत्यक्ष निहार रहे थे। इन सबका श्रेय जनजातीय परिसर को जाता है।

पूरे परिसर में भारत माता के साथ महान जनजातीय महापुरुषों के बारे में आकर्षक प्रदर्शनी लगी थी जो हर आने वाले का ज्ञानवर्धन कर रही थी। **"आदिरंग"** का मंच दोपहर में धार्मिक आयोजन कथा प्रवचन व संध्या को जनजातीय नृत्यों से सज जाता था। सुंदर-आकर्षक व अद्‌भुत कलाकारी इसको पूरे मेला क्षेत्र से अलग पहचान दिलाती।

यह सम्पूर्ण परिसर अपने आप में बेहद आकर्षक था। जो यहाँ एक बार आता वो अगली बार अपने परिजनों को लाता। अपने इष्ट मित्रों को सोशल मीडिया पर आमंत्रण देता। इसकी भूरी-भूरी प्रशंसा करता। यहाँ आए हुए अनेक भाई-बहनों से बातचीत में पता चला कि वो केवल यहाँ घूमने आए थे परन्तु यहीं ठहर गए और सिंहस्थ कुंभ पूरा करके ही जाने वाले हैं।

भारत की आध्यात्मिक गहराई, वनवासी आस्था और विश्वास, नैसर्गिक उन्मुक्त हँसती खेलती लोक संस्कृति को एक साथ साकार होते, न केवल देखा है अपितु इस परिसर में उसके उत्स, आत्मीयता व सत्व को भी अनुभूत किया है।

यह लोक लुभावन परिसर न केवल देखने में आकर्षक था, अपितु यहाँ मंगल प्रभात से शुभ रात्रि तक सम्पन्न होने वाली प्रत्येक गतिविधियाँ भी अपने आप में महत्वपूर्ण और इस जनजातीय परिसर का गौरवपूर्ण अंग थी। प्रात: जब सामूहिक रूप से वनवासी कलाकार बंधु अपने पारम्परिक वाद्यों के साथ और पारम्परिक वेशभूषा में गाते, बजाते हर्षोल्लास के साथ प्रात:काल स्नान के लिये निकलते तो जो सृष्टि निर्मित होती उसका शाब्दिक वर्णन करना कठिन है। क्षिप्रा मैया की जय, जय महाकाल के नारों से सारा शहर गुंजायमान हो उठता था। वहाँ से लौटकर रूद्राक्ष से बने शिवलिंग के समक्ष बैठकर पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन, आराधना तथा शुभ संकल्प करना परिसर

का एक सार्थक संदेश था। हर रोज दोपहर के समय होने वाली भागवत कथा लोगों को आकर्षित कर रही थी।

हर तीन दिन के अंतराल पर तीन, चार राज्यों के जनजाति प्रतिनिधि कुंभ में पधार रहे थे। केरल से हिमाचल और गुजरात से अरुणाचल तक सारे देश के जनजाति बंधु भगिनी उत्साह के साथ कुंभ में शामिल हो रहे थे। पूरे माह में लगभग 60000 से अधिक वनवासी कुंभ में शामिल हुए। सब का भोजन शबरी भोजनालय में तथा रात्रि विश्राम बड़े पंडालों में होता था।

जनजातीय परिसर में अनेक प्रकार की गतिविधियों का संचालन सुचारू रूप में चला। हर कोई अपना कार्य पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करता चला जा रहा था। कोई शिकायत व शिकन नाममात्र की भी नहीं थी। यहाँ तक कि प्राकृतिक आपदा व परेशानियों ने भी हतोत्साहित नहीं किया, सब जुटे रहे इस भाव से कि यह सब उनके परिवार का ही काम है।

इस परिसर में संचालित गतिविधियों में अत्यंत महत्वपूर्ण उपक्रम था, प्रतिदिन की सांस्कृतिक संध्या। जिसमें प्रतिदिन सायं 6 बजे से रात्रि 10 बजे तक अलग-अलग प्रान्तों के वनवासी कलाकार अपनी कलात्मक प्रस्तुतियाँ देते थे। इस दौरान सम्पूर्ण परिसर प्रफुल्लित होकर हर्षोल्लास से आनंदित हो उठता। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को निखारने उसे मंच पर आकर्षक रूप में प्रस्तुत करने में कलाकारों की लगन, तन्मयता और परिश्रम के साथ परिषद् की पूरी टीम के साथ "वन्या" और आदिम जाति अनुसंधान एवं विकास संस्था, भोपाल का भी भरपूर सहयोग रहा। हर दिन लोग समय से पूर्व आकर बैठ जाते और कार्यक्रमों का भरपूर आनंद लेते। कैमरों में फोटो कैद करने की होड़ लगी रहती। तालियों की गड़गड़ाहट से दर्शक दीर्घा गुंजायमान रहती। कार्यक्रम के उपरांत भी हर कोई इन कलाकारों के साथ फोटो और सेल्फी फोटो खिंचाने को उत्सुक रहता।

12 मई के दिन "चरैवेति चरैवेति" के प्रांगण में जनजाति जनप्रतिनिधियों का सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन मे परम पूजनीय सरसंघचालक मोहन जी भागवत, पूज्य संतश्रेष्ठ सत्यमित्रानंद गिरि, मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय अध्यक्ष मा. जगदेवराम उरांव, संयुक्त महामंत्री श्री विष्णुकान्त जी ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया। कल्याण आश्रम द्वारा प्रकाशित जनजाति दृष्टिपत्र पर सम्मेलन में प्रकाश डाला एवं जनप्रतिनिधियों की भूमिका पर वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में लगभग 4500 जनजाति जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

इस परिसर में सरकार्यवाह माननीय भैय्याजी जोशी भी पधारे और कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाया। मध्यप्रदेश के जनजाति कार्यमंत्री श्री ज्ञानसिंह जी, महेश गागडा, केन्द्रीय मंत्री श्री सुदर्शन भगत, श्री विष्णुदेव साय, श्री फगनसिंह कुलस्ते, छत्तीसगढ के जनजाति कार्यमंत्री श्री केदार कश्यप जी ऐसे अनेकों नेता पधारे। परिसर में जनजाति समाज के संतों के साथ महामंडलेश्वर यतीन्द्रानंद गिरि, साध्वी साक्षी, परमार्थ निकेतन के स्वामी सच्चिदानंद, साध्वी भगवती ऐसे विभूतियों ने प्रांगण को पावन किया।

वनवासी कल्याण आश्रम और इसकी गतिविधियों ने आस्था के इस महापर्व सिंहस्थ 2016 में जनमानस पर एक अमिट छाप छोड़ी है। जिसने भी इसे देखा इसकी गतिविधियों का अवलोकन किया, प्रदर्शनी को निहारा वह इसे कभी नहीं भूल सकेगा। यह न केवल जनजातीय विरासत और हमारी सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने और उसे लोगों के बीच लाने का सार्थक प्रयास था, बल्कि सामाजिक समरसता और वन्य संस्कृति से समरस और सराबोर होकर राष्ट्र की माटी को चंदन समझ शीश पर धरने का, वन्य आस्थाओं से एकाकार होने का एक राष्ट्रीय संदेश भी था। ■

कल्याण आश्रम गोवा द्वारा भव्य कृषि महोत्सव का आयोजन

भारत गाँवों में बसता है। ग्राम्यजीवन आज भी कृषि आधारित है और यदि हम जनजाति क्षेत्र की बात करें तो वहाँ अधिकतम खेती वर्षा पर आधारित है। छोटे-छोटे जमीन के टुकड़ों पर जनजाति किसान आज भी परम्परागत रुप में खेती करता है। स्वतंत्रता प्राप्त हुए इतने वर्ष हो गए, परन्तु कुछ अपवादों को छोड़ दें तो न तो किसी ने उसे वैज्ञानिक खेती के बारे में जानकारी दी है, न उन्नत कृषि के पाठ पढ़ाये हैं। न उसकी भूमि की उर्वरा शक्ति का कभी परीक्षण किया होगा, न उसे कभी अच्छे बीज उपलब्ध कराये होंगे।

वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता शिक्षा, आरोग्य के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के सेवा प्रकल्प चलाते हैं, साथ में कृषि प्रशिक्षण, पशु संवर्धन जैसे प्रयास भी करते हैं। कल्याण आश्रम-गोवा द्वारा फोंडा में ऐसे ही एक भव्य कृषि महोत्सव का आयोजन हुआ। स्थानीय सरकार ने भी इसमें सराहनीय सहयोग दिया। कृषि विभाग, जनजाति विकास विभाग और पशुपालन विभाग संयुक्त रुप में सहयोगी रहे। आसपास के क्षेत्र से हजारों किसानों ने इस कृषि महोत्सव का लाभ उठाया। वैज्ञानिक कृषि, सब्जी उगाने के प्रयास, उन्नत बीज की प्राप्ति, पशुपालन, जैसे कई प्रकार से यह कृषि महोत्सव किसानों को और विशेषकर जनजाति बन्धुओं को लाभदायी रहा।

इस निमित्त वनवासी कल्याण आश्रम देवगिरि प्रांत के अध्यक्ष श्री चैतराम पवार बारीपारा की उपस्थिति में पत्रकार वार्ता भी हुई। उन्होंने बारीपाड़ा जैसे वनवासी गाँव के विकास हेतु किये प्रयासों का ब्योरा दिया। गोवा के कृषि मंत्री श्री रमेश तवड़कर ने विकास की दिशा में किये प्रयासों के रुप में चैतराम पवार का अभिनंदन किया और कृषि महोत्सव की आवश्यकता की ओर सबका ध्यान दिलाया। ■

कोलकाता में हितरक्षा आयाम की बैठक सम्पन्न

वनवासी कल्याण आश्रम के हितरक्षा आयाम की अखिल भारतीय बैठक 5, 6 मार्च 2016 को कोलकाता के कल्याण भवन में सम्पन्न हुई जिसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष जगदेवराम उरांव महामंत्री चंद्रकान्त देव अ. भा. सह संगठन मंत्री अतुल जोग, अ. भा. जनजाति हितरक्षा प्रमुख गिरिश कुबेर तथा सह हितरक्षा प्रमुख ओम प्रकाश अग्गी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। वर्तमान में देश भर के जिन प्रातों में हितरक्षा प्रमुख नहीं है वहाँ हितरक्षा प्रमुखों की योजना करना और जहाँ प्रदेश प्रमुख हैं उनके माध्यम से हितरक्षा के कार्य को ग्रामीण स्तर तक ले जाना इस पर विचार हुआ। विशेष यानि इस आयाम हेतु महिला सहभागिता बनाने पर भी विचार हुआ।

इस बैठक में 21 प्रान्तों से 47 की संख्या रही। कार्यकर्ताओं द्वारा देश भर में हुए कार्यक्रमों का कथन हुआ, जैसे किनवट (महाराष्ट्र), जशपुर (छत्तीसगढ़) इत्यादि। भविष्य में होने वाले अधिकारियों के प्रवास की योजना, कार्यकर्ता प्रशिक्षण जैसे विभिन्न विषयों पर चर्चा विमर्श हुआ।

राष्ट्रीय अध्यक्ष जगदेवराम ने समापन में कहा कि हम शिक्षा, आरोग्य, स्वालम्बन जैसे विभिन्न प्रकार के सेवा कार्यों का संचालन कर रहे हैं, वह जितना आवश्यक है उतना ही जनजाति समाज की प्रतिदिन की समस्या के समाधान हेतु प्रयास करना भी आवश्यक है। हितरक्षा आयाम के इस महत्वपूर्ण पहलू की ओर ध्यान देना समय की मांग है। ■

बलिदान दिवस 9 जून पर विशेष...

वनवासी महानायक बिरसा मुंडा : जीवन परिचय

झारखंड के आदिवासी दम्पति सुगना और करमी के घर 15 नवंबर 1875 को जन्मे बिरसा मुंडा ने साहस की स्याही से पुरुषार्थ के पृष्ठों पर शौर्य की शब्दावली रची। उन्होंने हिन्दू धर्म और ईसाई धर्म का बारीकी से अध्ययन किया तथा इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि आदिवासी समाज मिशनरियों से भ्रमित हो रहा है और धर्मांतरण की ओर अग्रसर हो रहा है तथा हिन्दू धर्म को ठीक से न तो समझ पा रहा है, न ग्रहण कर पा रहा है। जबकि इसी में सबका हित है।

बिरसा मुंडा ने महसूस किया कि आचरण के धरातल पर आदिवासी समाज अंधविश्वासों की आंधियों में तिनके-सा उड़ रहा है तथा आस्था के मामले में भटका हुआ है। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि सामाजिक कुरीतियों के कोहरे ने आदिवासी समाज को ज्ञान के प्रकाश से वंचित कर दिया है। धर्म के बिंदु पर आदिवासी कभी मिशनरियों के प्रलोभन में आ जाते हैं, जो कि गलत है। भारतीय जमींदारों और जागीरदारों तथा ब्रिटिश शासकों के शोषण की भट्टी में आदिवासी समाज झुलस रहा था। बिरसा मुंडा ने आदिवासियों को शोषण की नाटकीय यातना से मुक्ति दिलाने के लिए उन्हें तीन स्तरों पर संगठित करना आवश्यक समझा। पहला तो सामाजिक स्तर पर ताकि आदिवासी-समाज अंधविश्वासों और ढकोसलों के चंगुल से छूट कर पाखंड के पिंजरे से बाहर आ सकें। इसके लिए उन्होंने आदिवासियों को स्वच्छता का संस्कार सिखाया। शिक्षा और सहयोग का महत्व समझाया।

सामाजिक स्तर पर आदिवासियों के इस जागरण से जमींदार-जागीरदार और तत्कालीन ब्रिटिश शासन तो बौखलाया ही, पाखंडी झाड़-फूंक करने वालों की दुकानदारी भी ठप्प हो गई। ये सब बिरसा मुंडा के खिलाफ हो गए। उन्होंने बिरसा को साजिश रचकर फंसाने की काली करतूतें प्रारंभ की।

दूसरा था आर्थिक स्तर पर सुधार ताकि आदिवासी समाज को जमींदारों और जागीरदारों के आर्थिक शोषण से मुक्त किया जा सके। बिरसा मुंडा ने जब सामाजिक स्तर पर आदिवासी समाज में चेतना पैदा कर दी तो आर्थिक स्तर पर सारे आदिवासी शोषण के विरुद्ध स्वयं ही संगठित होने लगे। आदिवासियों ने "बेगारी प्रथा" के विरुद्ध जबर्दस्त आंदोलन किया। परिणामस्वरूप जमींदारों और जागीरदारों के घरों तथा खेतों और वन की भूमि पर कार्य रुक गया।

तीसरा था राजनीतिक स्तर पर आदिवासियों को संगठित करना। चूंकि उन्होंने सामाजिक और आर्थिक स्तर पर आदिवासियों में चेतना की चिंगारी सुलगा दी थी, अत: राजनीतिक स्तर पर इसे आग बनने में देर नहीं लगी। आदिवासी अपने राजनीतिक अधिकारों के प्रति सजग हुए। ब्रिटिश हुकूमत ने इसे खतरे का संकेत समझकर बिरसा मुंडा को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया। वहां अंग्रेजों ने उन्हें धीमा जहर दिया था। जिस कारण वे 9 जून 1900 को शहीद हो गए।

भारतीय इतिहास में बिरसा मुंडा एक ऐसे नायक थे जिन्होंने भारत के झारखंड में अपने क्रांतिकारी चिंतन से उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आदिवासी समाज की दशा और दिशा बदलकर नवीन सामाजिक और राजनीतिक युग का सूत्रपात किया। काले कानूनों को चुनौती देकर बर्बर ब्रिटिश साम्राज्य को सांसत में डाल दिया।

बिरसा मुंडा सही मायने में पराक्रम और सामाजिक जागरण के धरातल पर तत्कालीन युग के एकलव्य और स्वामी विवेकानंद थे।

महानायक बिरसा मुंडा के बलिदान दिवस 9 जून पर हम संकल्प लें कि सभी कुरीतियों को दूर करते हुए संगठित हिन्दू समाज का निर्माण करेंगे। ■

आस्था और श्रद्धा से मनाये गए रामनवमी उत्सव

- शशि अग्रवाल, सह-मंत्री कोलकाता महानगर

श्रीराम का संपूर्ण जीवन भारतीय संस्कृति, राष्ट्र जीवन और समस्त मानवता का पर्याय है। श्री राम के आदर्शों के माध्यम से सारे संसार ने भारत को जाना है। अपने जीवन के स्वर्णिम 14 वर्ष उन्होंने वनवासियों के बीच बिताये एवं उनकी संगठित शक्ति के बल पर महापराक्रमी रावणी सत्ता का विनाश कर रामराज्य की स्थापना की। वनवासियों, गिरिवासियों के संग बिताये उनके 14 वर्ष आज भी प्रासंगिक हैं। राम का चरित्र हमारे जीवन का आदर्श है। जीवन में मर्यादाओं के पालन से ही संस्कृति बनती है। हमारे आराध्य श्रीराम का जन्मोत्सव कभी भी सिर्फ धार्मिक अनुष्ठान की तरह नहीं रहा है। जन-जन में वनवासी के प्रति जागरुकता एवं शहरवासियों का उनके प्रति दायित्व का बोध लिए इस कार्यक्रम की रुपरेखा सभी कार्यकर्ताओं द्वारा तैयार की जाती है। कोलकाता में 11 एवं हावड़ा महानगर में 2 स्थानों पर समितियों ने रामनवमी पर भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्यक्रम किए। उत्सवों के विशेष द्रष्टव्य बिंदु :

- लेकटाउन अंचल की ओर से भारतीय नववर्ष एवं रामनवमी का आयोजन धूमधाम से मनाया। अवनी ऑक्सफोर्ड कम्युनिटी हॉल में इसका आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में सुशील कुमार झुनझुनवाला, सज्जन कुमार सुल्तानिया तथा प्रमुख वक्ता शंकरलाल अग्रवाल उपस्थित थे। इस मौके पर 21 बच्चों ने सामूहिक हनुमान चालीसा का पाठ किया। गणेश वंदना व नृत्य की भी प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम का आकर्षण लघुनाटिका "विश्वामित्र संग राम" का मंचन किया गया। इसमें राक्षसों के वध के साथ ही अहिल्या को श्राप से मुक्ति का दृश्य दिखाया गया। जिसकी बेहद सुंदर ढंग से प्रस्तुति की गई।
- कुम्हारटोली महिला समिति एवं बागबाजार पुरुष समिति द्वारा प्रत्येक वर्ष की भांति ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन किया गया।
- जोड़ामंदिर समिति की बहनों द्वारा शबरी द्वारा श्रीराम को बेर खिलाने के प्रसंग की भावपूर्ण प्रस्तुति दी गई। आयोजन में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती कल्पना जैन विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। मंचसज्जा बेहद आकर्षक एवं मनमोहक थी।
- साल्टलेक समिति ने "केवट प्रसंग" एवं 'कैकयी-श्रीराम संवाद" की मंचीय प्रस्तुति दी।
- कोलकाता एवं हावड़ा की अनेक समितियों ने सुंदरकांड का सामूहिक पाठ किया।
- सभी समितियों में वनवासी विषय पर अधिकारी कार्यकर्ता द्वारा उद्‌बोधन एवं आज के युग में उनके परंपरा के रक्षा हेतु किये जा रहे प्रयासों के जनसामान्य को जानकारी दी गई।
- बांगुड़ समिति द्वारा केवट प्रसंग का मंचन किया गया एवं सुमधुर भजन प्रस्तुत किये गये।
- सभी आयोजनों में स्थानीय गणमान्य व्यक्तियों को अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया।

श्री रामनवमी उत्सव को समिति स्तर पर सफल करने हेतु सभी कार्यकर्ता उत्साहपूर्वक सम्मिलित होते हैं। स्थानीय स्तर पर विराट पैमाने पर जनसंपर्क हो जाता है एवं सभी कार्यकर्ता इससे प्रेरणा लेकर नवीन उत्साह के साथ संगठन कार्य में जुट जाते हैं। इन आयोजनों से कार्यकर्ताओं का पारस्परिक सौमनस्य और सद्भाव को भी अभिव्यक्ति का अवसर मिल जाता है। ■

राष्ट्रीय सुरक्षा और धर्मांतरण

- पूरनचंद अग्रवाल

धर्म

धर्म एक जीवन पद्धति है जिसको धारण किया जाता है। धर्म केवल उपासना पद्धति नहीं है। हिंदू जीवन पद्धति ऋषि-मुनियों द्वारा स्थापित जीवन पद्धति है जिसमें व्यक्ति स्वयं के उत्कर्ष के साथ-साथ संपूर्ण विश्व के उत्कर्ष का चिंतन करता है।

धर्मांतरण

जब हम अपनी उपासना पद्धति छोड़कर ईसाई या मुसलमान बनते हैं तो हमारी पूरी जीवन पद्धति- भाषा, सोच, प्रतीक, रहन-सहन, व्यवहार आदि पूरा परिदृश्य ही बदल जाता है। यहाँ तक कि देश के साथ संबंध भी बदल जाता है। हमें हमारे पूर्वजों के प्रति, मातृभूमि के प्रति श्रद्धा नहीं रहती। अपने ही बंधु-बांधव विजातीय लगने लगते हैं। अपने प्रेरणास्रोत चर्च अथवा पादरी को या मुल्ला मौलवी को मानने लगते हैं।

धर्मांतरण क्यों होता है?

हिंदू समाज के पास एक श्रेष्ठ जीवन-दर्शन है, आध्यात्मिक तत्व ज्ञान है। विश्व के किसी भी पंथ-संप्रदाय के पास यह धरोहर नहीं है। विश्व के प्राय: सभी पंथों के अनुयायी एक ही महापुरुष को आदर्श मानकर उसके बताये मार्ग पर चलते हैं परन्तु वे इतने असहिष्णु हो जाते हैं कि अन्य पंथ-संप्रदाय को सहन नहीं कर पाते। उन्हें भारत का श्रेष्ठ तत्वज्ञान चुभता है।

भारत में लोकतंत्र है, लोक स्वातंत्र है, जनचेतना का उभार है, यह अनेक विदेशी लोगों की आँखों में चुभता है। इसी आत्महीनता के कारण वे अपने देश में धर्मांतरण करते हैं। भारत में तथाकथित धर्मनिरपेक्ष सरकार भी अतीत में उनके धर्मांतरण के कार्य में सहायक होती रही है।

हिंदुत्व ही मानवत्व है

हिंदू जीवन पद्धति सर्वश्रेष्ठ है। इसमें श्रेष्ठतम मानव मूल्यों का समावेश है जिसका आधार चार पुरुषार्थ- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष है। मोक्ष प्राप्त करना हमारे जीवन का लक्ष्य है। विश्व में किसी भी पंथ-संप्रदाय का लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना नहीं है। हिंदू ही उद्घोष करता है, वसुधैव कुटुम्बकम्, जियो और जीने दो, सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:, आदि। हिंदू समस्त विश्व में शांति चाहता है। समस्त जगत की रक्षा की बात करता है, पेड़ की उपासना करता है, सांपों को दूध पिलाता है, चींटी को आटा खिलाता है। वह समस्त प्राणियों में ईश्वर का दर्शन करता है।

हिंदू कभी किसी का धर्मांतरण नहीं करता

हिंदू की मान्यता है कि व्यक्ति की जहाँ भी श्रद्धा है उसी मार्ग पर आत्मविश्वास से बढ़ना चाहिए, उसे उसका इष्ट (भगवान) मिलेगा।

जिस समय हिंदू राष्ट्र अपने वैभव के शिखर पर था, विश्व में सभ्यता का विकास भी नहीं हुआ था उस समय विश्व को सभ्य और सुसंस्कृत बनाने के लिए हमारे देश से धर्माचार्य गये। उन्होंने वहाँ धर्मांतरण नहीं किया अपितु उस समाज की जहाँ श्रद्धा थी, उसे परिमार्जित किया और अधिक उदात्त बनाया। बौद्ध धर्म के आदर्शों से प्रेरित होकर अनेक राष्ट्रों ने बौद्ध धर्म अपनाया। कहीं भी तलवार का प्रयोग नहीं हुआ। उस समाज से छल नहीं किया गया।

मुगल काल में अत्याचारों से पीड़ित होकर हिंदू ने अपना धर्म छोड़ा। अनेक बार ऐसे अवसर भी आये जब वे पुन: अपने धर्म में वापिस आना चाहते थे किंतु उन्हें वापिस नहीं लिया गया। कश्मीर का मुसलमान यदि पुन: हिंदू बना लिया गया होता जो आज समस्या नहीं होती।

मानवों में श्रेष्ठ हिंदू का धर्मांतरण

अपने देश में ईसाई समाज व मुस्लिम समाज द्वारा बड़ी संख्या में धर्मांतरण हुआ है एवं हो रहा है। धर्मांतरण करके वे वैदिक सभ्यता को चुनौती देते हैं। उस चुनौती के पीछे उनका तत्वज्ञान नहीं है, सत्य भी नहीं है, नैतिक बल भी नहीं है। इस चुनौती के पीछे एक सैन्य शक्ति , एक अर्थ शक्ति और इसके बल पर वे सत्य सनातन, चिरंतन परंपरा को ही मिटाने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसे श्रेष्ठ अनुकरणीय, मानवीय गुणों से संपन्न हिंदू समाज का धर्मांतरण करके विश्व में क्या स्थापित होगा? एक जंगली सभ्यता, जो अपने मार्ग को ही श्रेष्ठ समझती है और अन्य का जीने का अधिकार छीन ले ऐसा खतरा विश्व जगत के अंदर उपस्थित हुआ है।

धर्मांतरण का वीभत्स स्वरूप

मुगलकाल में : तलवार के बल पर बड़ी संख्या में धर्मांतरण हुआ था। चँवर वर्ष के शासक संत रविदास को इस्लाम स्वीकार करने को कहा गया। अस्वीकार करने पर उन्हें मरे हुए पशुओं को ढोने का कार्य दिया गया। राजवंशों के पराभव होने पर उनके इस्लाम स्वीकार न करने पर उन्हें मैला ढोने के कार्य में लगाया गया- उनका मान भंग किया गया जिससे वे भंगी कहलाये। देश में अछूत समस्या यहीं से आरंभ हुई।

अंग्रेज काल से अब तक

मुगलकाल में पराभाव होने पर स्वाभिमानी समाज ने इस्लाम स्वीकार न कर वनजीवन अपनाया। इस प्रकार यह मध्यकाल का स्वतंत्रता सैनानी ही कालांतर में आदिवासी कहलाया। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में इस समाज ने अंग्रेजों को करारी शिकस्त दी। अंग्रेजों ने समस्त वनांचल को आने-जाने से प्रतिबंधित कर दिया एवं अपनी पादरी सेना को उनके धर्मांतरण में लगा दिया। धर्मांतरण में सब प्रकार के हथियारों (साम-दाम-दण्ड-भेद) का प्रयोग किया गया।

उदाहरण

1. कपट से- गाड़ी की चाबी बंद कर देना- राम का नाम लो- गाड़ी नहीं चलेगी, परंतु ईसा का नाम लेते ही गाड़ी चल पड़ेगी। भोले-भाले वनवासी ने ईसा को श्रेष्ठ समझ कर ईसाई धर्म अपना लिया।
2. मजबूरी से- बीहड़ वनवासी क्षेत्रों में चिकित्सा सुविधाएँ नहीं हैं। चर्च के डॉक्टर पहुँच गए हैं। इलाज तब करते हैं जब गले में क्रॉस पहन लिया जाता है।
3. लालच में- सदियों से अभावग्रस्त स्थिति से तंग आकर सब प्रकार के आर्थिक प्रलोभन से धर्मांतरण हुआ है-हो रहा है। ■

अमृत वचन

दुनिया में प्रसन्न रहने का एक ही उपाय है और वह यह कि अपनी जरुरतें कम करो।

- महात्मा गांधी

हमारे वनवासी बन्धुओं ने प्रकृति में चैतन्य को देखा। इसलिए वनवासी बन्धु सुपर स्पिरिच्युएल है। उनको एनिमिस्ट कहना उनका उपहास है।

- जगदेवराम उरांव

प्रकृति के नियमों के अधीन होकर चलना वनवासी जानते है। प्रकृति के परे जाने का प्रयास नगरों में हो रहा है। प्रकृति के परे जाने के प्रयास से ही विकृति निर्माण हुई है।

- स्वामी अवधेशानंद गिरि

सिलाई प्रशिक्षण नें मेरे जीवन की दिशा बदल दी : वनफूल

- उषा अग्रवाल, कोलकाता- हावड़ा संभाग प्रमुख

वनवासी महिलाओं की अंतर्निहित प्रतिभा, ऊर्जा एवं क्षमता को रचनात्मक दिशा देने का विनम्र प्रयास है स्वालम्बन योजना जिसके तहत सिलाई एवं मोतियों द्वारा विविध कलात्मक चीजें (बंदनवार, लेस, फूलदान आदि) बनाने का 15 दिनों तक प्रशिक्षण दिया जाता है। 2013 के फरवरी माह से सिलाई प्रशिक्षण का क्रम प्रारम्भ हुआ जिसमें 15 से 20 महिलाओं को बुलाकर सामूहिक रुप से प्रशिक्षित किया जाता है। 15 से 20 महिलाओं को बंगाल के सभी प्रांतो के सुदूर वनवासी गांवों से महिलाओं को कल्याण भवन में बुलाकर योग्य प्रशिक्षिकाओं द्वारा विधिवत प्रशिक्षण दिया जाता है।

सलवार, चुड़ीदार, तकिया की खोली, फ्राक, पेटीकॉट आदि सभी प्राथमिक एवं आवश्यक वस्त्रों की सिलाई सिखा दी जाती है। सीखने के लिए आवश्यक कपड़े, धागा, मशीन, इत्यादि कल्याण भवन में उपलब्ध करवाये जाते हैं। प्रशिक्षण समाप्ति के पश्चात सभी को प्रमाण पत्र दिया जाता है। प्रशिक्षण का क्रम प्रतिमाह अथवा एक महीने के अंतराल से अबाध रुप से जारी है।

इस बार मेरा भी सुन्दरवन से सिलाई प्रशिक्षण हेतु आई बहनों से साक्षात्कार हुआ। सभी बहनें बड़ी तन्मयता से सीख रही थी। कपड़ों की कटाई-छँटाई एवं सिलाई के कार्य में निपुण हो चुकी सुन्दरवन निवासी महिला वनफूल से मैंने पूछ ही लिया - "इतनी दूर से यहाँ आकर पन्द्रह दिनों से सीख रही हो, कैसा लग रहा है तुम्हें?" उसके चेहरे पर मुस्कान फैल गई। बोली - "अपनी सभी भगिनी बन्धुओं के संग यहाँ पर जो कुछ सीखा है वह मेरे बच्चों के भविष्य के लिए बहुत ही सुखद होगा।" तुम्हारा पति पर्याप्त कमाता नहीं है क्या - मैंने पुछा। उसने कहा - नहीं, मेरे पति को नशे की बुरी आदत थी जिसके कारण हमेशा कलह करता था। मैं कुछ सालों से मेरे भाई के पास रहती हूं। हमेशा मेरे मन में भाई पर बोझ हुँ ऐसा भाव रहता है, **लेकिन कल्याण आश्रम ने मुझे जीने की नई राह सिखा दी**। उसने तत्परता से एक छोटी सी फ्राक दिखाते हुए कहा - "देखो यह मैंने बनाई है। अब मैं घर जाकर पैसा-पैसा जोड़कर सिलाई मशीन खरीदूंगी। मेरे गाँव के पास कपड़े सिलाई करने का छोटा कारखाना है वहाँ मुझे काम मिल जायेगा। मैं अपने घर को संभालते हुए यह कार्य सरलतापूर्वक कर लूंगी। मेरा बेटा स्कूल जाता है उसकी पुस्तकें एवं जरूरी सामान मैं खरीद सकूंगी। मेरी तीन वर्षीय बेटी का लालन-पालन भी ठीक से हो सकेगा।" वनफूल से बातचीत कर मेरे मन को बहुत सुकून मिला। वनवासी बहनों का स्वाभिमान और अस्मिता जाग रही है। उनकी आखों में आत्मविश्वास की ज्योति स्पष्ट परिलक्षित होने लगी है। हमारा दायित्व वनवासी को गले लगाओ सार्थक हो रहा है। ■

शोक संवाद

जुगलकिशोर जैथलिया पंचतत्व में विलीन

समर्पित सामाजिक कार्यकर्ता, भाजपा की प्रादेशिक एवं केन्द्रीय समिति के सदस्य एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के निष्ठावान स्वयंसेवक श्री जुगलकिशोर जैथलिया का 1 जून 2016 को निधन हो गया। कोलकाता के हिन्दी भाषी समाज की कई महत्वपूर्ण संस्थाओं के वे प्रेरक एवं परिकल्पक थे। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, बड़ाबाजार लाईब्रेरी, जालान पुस्तकालय, राजस्थान परिषद जैसी संस्थाओं के बड़े पदों पर लम्बे काल खंड तक कार्य कर चुकने के बाद अब वे मार्गदर्शक के महत्वपूर्ण दायित्वों का सक्रियता से निर्वाह कर रहे थे। कुमार सभा पुस्तकालय में तो उनके मन प्राण बसते थे। अनेक संस्थाओं एवं संगठनों के कार्यकर्ताओं ने उनसे प्रेरणा प्राप्त कर सामाजिक कार्यों में रुचिपूर्वक काम करना शुरु किया था। पूर्वांचल कल्याण आश्रम के साथ उनका आत्यंतिक लगाव था। उनके अनुभव सिद्ध विचार तथा व्यवहार पुष्ट विवेक से कार्यकर्ताओं को नई ऊर्जा प्राप्त होती थी। लम्बी बीमारी के बाद उनका हमसे दूर चला जाना वस्तुत: कोलकाता के हिन्दी जगत की बड़ी क्षति है।

उनके निधन पर कल्याण आश्रम परिवार की अश्रुपूरित श्रद्धांजलि। परमात्मा उनकी पवित्र आत्मा को सद्गति प्रदान करे, यही प्रार्थना। ■

भारतीय नोटों पर जनजातीय भाषाओं को भी मिला स्थान

भारतीय नोटों पर अब जल्द ही मैथिली के साथ-साथ मणिपुरी, संथाली, डोंगरी और बोडो जैसी जनजातीय भाषाओं को भी स्थान मिलेगा। प्रधानमंत्री कार्यालय ने क्वाइनस एण्ड करंसी डिविजन को नोट पर अंकित होने वाले वाक्यों को संविधान की आठवीं अनुसूचि में शामिल सभी 22 भाषाओं में लिखने का निर्देश जारी किया है।

अब जल्द ही पूर्वांचल के विभिन्न क्षेत्रों में बोले जाने वाली स्थानीय जनजातीय भाषाओं की उपस्थिति भारतीय नोटों पर दर्ज होगी। वहीं बिहार की स्थानीय भाषा मैथिली को यह दर्जा प्राप्त हुआ।

मैथिली भाषा के जानकार सुभाष चौधरी ने इसकी जानकारी के लिए वित्तमंत्री और आरबीआई गवर्नर को 25 जनवरी, 2014 को आग्रह किया था। ■

योजना बैठक सम्पन्न

गत वर्ष का लेखा जोखा एवं अगले वर्ष कार्य को व्यवस्थित रुप से करने का संकल्प लिए कोलकाता हावड़ा महानगर के शताधिक कार्यकर्ता 29 मई 2016 को कल्याण भवन में एकत्रित हुए। इस अवसर पर अखिल भारतीय सहसंगठन मंत्री माननीय अतुल जी जोग का प्रेरणादायी मार्गदर्शन मिला एवं नवीन दायित्वों की घोषणा भी की गई।

आगामी कार्यक्रम

कोलकाता महानगर की महिला समितियों का सिंधारा उत्सव आगामी 3 अगस्त को कल्याण भवन में मनाया जायेगा। सभी महिलाएं अपने परिजनों के साथ सादर आमंत्रित हैं।

बोधकथा .....

सच्ची प्रार्थना

एक गाड़ीवान अपने काम से संतुष्ट नहीं था। हर समय वह परेशान रहता था। उसने एक संत से इस बात पर चर्चा की, महाराज, मैं एक गांव से दूसरे गांव गाड़ी ले जाता हूं। यह काम मुझे पसंद नहीं, क्योंकि गाड़ी हांकने के कारण मैं भगवान की प्रार्थना करने से वंचित रहता हूं। मुझे ईश्वरोपासना का समय ही नहीं मिलता। मैं इस धंधे से छुटकारा चाहता हूं। संत ने पूछा-, क्या गाड़ी चलाते समय तुम्हें रास्तें में गरीब, अपंग और वृद्ध आदि मिलते हैं? गाड़ीवान ने कहा, 'हां ऐसे लोग समय-समय पर मिलते रहते हैं।' मेरा काम तो निरंतर यात्रा करना ही है। संत ने पूछा, 'तुम उनसे पैसे लेते हो या उन्हें मुफ्त में यात्रा कराते हो? इस पर गाड़ीवान बोला, मैं गरीब, दीन-दुखियों, बूढ़े अपाहिज आदि से कुछ भी नहीं लेता। ऐसे लोगों को देखकर मेरा हृदय दया से परिपूर्ण हो जाता है। इस पर संत से कहा, तब तो तुम इस पेशे को बिल्कुल मत छोड़ना। तुम गरीब और असहाय व्यक्तियों को एक जगह से दूसरी जगह छोड़कर जो पुण्य कमा रहे हो, वह तुम्हें प्रार्थना से कभी नहीं मिलेगा। तुमने उनकी मदद कर उनसे कहीं बड़ा काम किया है, परोपकार ही जीवन की सार्थकता है जो दिन-रात भगवान का नाम जपते रहते हैं या तीर्थयात्रा या व्रत-उपवास करते हैं उनसे कहीं बढ़कर तुमने सच्ची साधना की है। जो कर रहे हो, उसे ही मन लगाकर करते रहो। जब तक तुम समर्थ हो इस कार्य को कभी मत छोड़ना। गाड़ीवान संतुष्ट होकर चला गया। उसके सारे संकल्प विकल्प तिरोहित हो गये। वह नई ऊर्जा के साथ अपने कार्य में संलग्न हो गया। ■

कविता .....

मैंने भजा है जय श्रीराम

- केशरी नाथ त्रिपाठी, राज्यपाल, पश्चिम बंगाल

मैंने भजा है जय श्रीराम
भजो सब कोई जय श्रीराम।

यह अमर मंत्र है ईश नाम है
सब गुण का यह एक नाम है
सब पापों का मुक्ति धाम है
जग में पावन राम नाम है।
दशरथ-नन्दन जय श्रीराम।

राम नाम का जाप अनूठा
जो जपता पाता फल मीठा
लोक बने, परलोक बनाता
पाप हरे औ" पुण्य बसाता
रघुकुल-चंदन जय श्रीराम।

मात-पिता के आज्ञाकारी
छोड़ी पुरी अयोध्या न्यारी
संग में लक्ष्मण, जनकदुलारी
बिलख रहे सारे नर-नारी
कूच किया फिर भी वन धाम।

मोह नहीं कुछ राज-पाट का
आदर किया निषाद राज का
कोल, भील, बंदर, भालू संग
पाया प्यार जटायु राज का।
सबके गुण-ग्राहक श्रीराम।

अभिनंदन

कविता राउत का रियो ऑलम्पिक खेलों के लिए चयन

गुवाहाटी में हुए दक्षिण एशियाई क्रीड़ा प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त करने पर ऑलम्पिक खेलों के लिए कविता राउत का चयन हुआ है। हम सब जानते ही हैं कि वनवासी परिवार से आयी कविता विद्यालय में अध्ययन करते समय विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा संचालित छात्रावास में रही और वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा आयोजित खेल प्रतियोगिता से उसकी प्रतिभा का परिचय सबको हुआ। पश्चात कल्याण आश्रम से सतत् परिचय रहने के कारण और नासिक के भोसला मिलीटरी स्कूल में विशेष प्रशिक्षण मिलने के कारण आज कविता अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आगे आयी है।

2015 में राँची में आयोजित सप्तम् राष्ट्रीय वनवासी क्रीड़ा महोत्सव के उद्घाटन समारोह में अर्जुन अवार्ड विजेता कविता विशेष अतिथि के रुप में आई थी। अपने भाषण में उसने कहा- **मैं वनवासी कल्याण आश्रम से जुड़ी हूँ इसका मुझे गौरव है।** उसके मन में अपने प्रशिक्षक के प्रति गुरु और पालक पिता जैसे आदरभाव हैं। यह उसके परिवार के संस्कार का परिणाम है। खेल विश्व में कविता का परिचय "सावरपाडा एक्सप्रेस" ऐसा है। यह बात सूचित करती है कि एक छोटे से वनवासी गाँव से आयी एक लड़की आज विश्व स्तर पर दौड़ कर देश का नाम उज्ज्वल करेगी। ■

अनुकरणीय

- तारा माहेश्वरी

परहित सरिस धर्म नहि भाई ....बाबा तुलसीदास जी की इन पंक्तियों को यथार्थ करती हमारे जोडाबगान समिति की एक सदस्या ने वनवासी हित हेतु कुछ न कुछ करते रहने का प्रण लिया है। लगभग 8 आठ वर्ष पूर्व यह कार्यकर्ता जोड़ाबगान समिति से जुड़ी किन्तु अति शीघ्र ही मन प्राणपूर्वक इन्होंने वनवासी सेवा कार्य के मर्म को आत्मसात् कर लिया। अगर मन में भावना दृढ़ हो तो अर्थ आड़े नहीं आता। मध्यमवर्गीय परिवार की यह सदस्या गोसाबा छात्रावास के लिए एक कक्ष हेतु डेढ़ लाख रुपयों का अनुदान देती हैं तो कभी हमारे वनवासी गाँवों में जल संरक्षण हेतु कुएं बनवाने के लिए आर्थिक अनुदान। अभी जब भागवत कथाकार परम पूज्या विजया जी उर्मलिया की बहन के विवाह का प्रसंग आया तो जोड़ा बगान की इस कार्यकर्ता ने आगे बढ़कर 50,000/- का अनुदान दिया। मानवीय संवेदना का यह अनुकरणीय उदहारण है। सिर्फ आर्थिक अनुदान ही नहीं इनकी मेहनत, लगन, उत्साह, योजना और दूरदृष्टि के बदौलत जोड़ा बगान समिति विकास और प्रगति के पथ पर द्रुतगति से आगे बढ़ रही है। नमन है ऐसे परमार्थी को जिनके मन में अबल वनवासियों को सबल बनाने की प्रबल इच्छा शक्ति एवं निष्ठा है।

• • •

कोलकाता महानगर के मंत्री श्री संदीप जी चौधरी ने अपनी विवाह की 25वीं वर्षगांठ पर वनवासी सेवा एवं संगठन कार्यों हेतु 29 मई को अखिल भारतीय सहसंगठन मंत्री श्री अतुल जी जोग को धनराशि प्रदान की। अपने परिवार के मंगल उत्सवों एवं आयोजनों में वनवासी को स्मरण करने का हम सभी संकल्प लें तो वनवासी को मुख्यधारा में समरस करने में भला क्या देर लगेगी? बधाई हो- साधुवाद! ■

सुन्दरवन के गोसाबा में वनवासी
कन्या छात्रावास निर्माण हेतु समर्पित

राखी मेला

प्रदर्शनी सह बिक्री

दिनांक :

१६, १७, १८ जुलाई २०१६
शनिवार, रविवार एवं सोमवार

स्थान :

गोकुल बेन्क्वेट, लेक टाऊन, वीआइपी क्रासिंग

आयोजक :

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

लेक टाऊन महिला समिति

आप सभी सबंधु-बांधव सादर आमंत्रित है

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com

Printed Matter

Book - Post